सेवा ही जीवन की सफलता : हजारे

प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे सभा को सम्बोधित करते हुए।

अन्ना हजारे, दादी जानकी, ब्र.कु.रमेश, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.निर्वैर तथा संतोष भारती।

अन्ना हजारे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.निर्वैर।

पत्थर खाने में अपना जीवन बिताता हो तो इंजीनियर बनके क्या किया ? इतने विद्यालय चल रहे हैं लेकिन सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण नहीं हो रहा है। ये दु:ख की बात है। जो कार्य वो नहीं कर पा रहे हैं वह कार्य प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का घटक है इन्सान। जब तक इन्सान नहीं बदलेगा तब तक गाँव नहीं बदलेगा, गाँव नहीं बदलेगा तो देश नहीं बदलेगा, देश नहीं बदलेगा तो विश्व नहीं बदलेगा तो विश्व में शान्ति नहीं आयेगी। तो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जो कार्य हो रहा है इन्सान का निर्माण। सुसंस्कृत आदमी का निर्माण,

से हो रहा है यह बात मुझे बहुत महत्वपूर्ण लगती है। सभी संतो ने कहा है - विश्व शान्ति, विश्व का घटक है देश, देश का घटक है गाँव और गाँव इससे विश्व में शान्ति आयेगी। कैसा आदमी ? जिसका चरित्र शुद्ध है आचार-विचार शुद्ध है। जीवन निष्कलंक है।

नव निर्माण में त्याग का बड़ा महत्तव

परमात्म मिलन के हृदयस्पर्शी अनुभव से अभिभूत अन्ना हजारे। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज मल्टी मीडिया के अध्यक्ष ब्र.कु.करूणा, संतोष भारती, तेलगू फिल्मों के अभिनेता सुमन्त।

का बेदाग है जीवन में त्याग है, त्याग करना ही पड़ता है। ये हमारी भूमि कह रही है हजारों साल से, बिना त्याग के कोई भी अच्छा कार्य नहीं होता कुछ न कुछ त्याग करना ही पड़ता है। हम खेती में देखते हैं ना। दाना से भरे भुट्टे नजर आते हैं मक्का, ज्वार, बाजरा। कब नजर आता है एक दाने को पहले जमीन में मिटना पड़ता है तब नजर आता है। मैं देख रहा हूँ यहां जो भी है, सारे दाने जमीन में जाने के लिए तैयार है इसलिए ये भुट्टा नजर आ रहा है क्योंकि ये जमीन में जाने वाले दाने हैं। नहीं तो बहुत से दाने सोचते हैं मेरे पास रहने को कोठी है, घूमने को गाड़ी है, इतनी सारी जमीन जायदाद है। मैं लखपति हूँ जमीन में क्यूँ जाऊँ सोचते हैं लोग। बंगले में रहने वाले, एयरकंडिशन में रहने वाले सोचते हैं मैं जमीन में क्यों जाऊँ। जो दाने यह सोचते हैं वही दाने चक्की में जाते हैं, पिसते हैं और आटा बन जाते हैं। जमीन में नहीं गये तो चक्की में गये आटा बन गया खत्म। हम उनको हर बार पूछते हैं कि आपके घर में दो सौ वर्ष पहले कौन-कौन थे बताइये तो नाम नहीं बताते। चक्की में गये आटा बन गया खत्म। स्वामी विवेकानन्द की जयन्ति क्यों मनाते, बाबा साहेब अम्बेडकर की जयन्ति क्यों मनाते क्योंकि जमीन में गये इसलिए भुट्टे लेकर खड़े हैं। इसलिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जो ज्ञान मिल रहा है वो मुझे बहुत महत्वपूर्ण लगता है। सब लोग दौड़ रहे हैं, दौड़ रहे हैं कितनी भीड़ है। दिल्ली में देखो और शहर में देखो चलने के लिए रास्ता कम पड़ रहा है, सुबह चार बजे उठता है रात्रि दस बजे तक दौड़ता है और थोड़ा, और थोड़ा, और थोड़ा...शमशान भूमि जाने तक कोई भी रूकता नहीं दौड़ रहा है। जन्म में आता कुछ लेकर आता नहीं, जाता कुछ लेकर जाता नहीं। उम्र भर मेरा-मेरा, मेरा-मेरा..। हाथ में देखो कुछ नहीं तो जीता किसलिए है ?

अन्ना हजारे को शांतिवन परिसर का अवलोकन कराते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय।

आनन्द बाहर नहीं अन्दर

ये ज्ञान जो परमात्मा शिव बाबा ने हमें दिया वो महत्वपूर्ण है कि हर इन्सान दौड़ उन्होंने कहा बच्चों आनन्द बाहर नहीं है वो आनन्द अन्दर से मिलता है। ये मेरा आपसे उपदेश नहीं मेरा भाषण नहीं है, मैं अनुभव कर रहा हूँ। क्या है मेरे पास मन्दिर में रहता हूँ, एक बिस्तर है, एक

आधुनिक तकनीकी से बने भण्डारे का अवलोकन करते हुए अन्ना हजारे। साथ हैं ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.सूर्य, ब्र.कु.भानू, ब्र.कु.राजशेखर तथा अन्य।

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 *रूपये (वार्षिक)*
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, webside:www.omshantimedia.info

प्रति

RNI NO RAJHN/2000/721, NEWS PAPER TO POST CONCSSIONAL REGISTRATION NO. RJ/SIROHI/9623/12-14, 12TH TO 14 TH, 22 ND TO 24TH POSTED TO SHANTIVAN POST OFFICE
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, सलाहाकार संपादक: कमल दीक्षित, प्रकाशक: ब्र.कु.करूणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज् मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 2 अप्रेल -II, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

त्यागना होगा तेरा-मेरा : अन्ना

शान्तिवन। पद्मभूषण से सम्मानित प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे ने ब्रह्माकुमारी संस्था के विशाल डायमण्ड हाल में उपस्थित लगभग पच्चीस हजार ब्रह्माकुमार भाई-बहनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मेरे सामने एक प्रश्न खड़ा है कि आप सभी ज्ञानियों के सामने मैं अज्ञानी क्या बोलूँ लेकिन परमात्मा शिव बाबा के आशीर्वाद से जो मेरे शब्द निकलेंगे मैं वही बताऊँगा सबसे पहले मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से आप सब लोग जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा के लिए कोई शब्द नहीं है, उस सेवा की कोई कीमत नहीं हो सकती है। ऐसी सेवा को पहले मैं नमन करता हूँ।

आध्यात्मिक सेवाओं की मूर्ति ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए सामाजिक सेवाओं की मूर्ति अन्ना हजारे। साथ हैं दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु.सुनंदा, संतोष भारती तथा अन्य।

'मैं और मेरे' की दृष्टि से उपर उठें

आज 'मैं और मेरे' के परे देखने की दृष्टि इन्सान में नहीं रही है। मैं और मेरा कई लोग तो मैं और मेरा कहकर भी नहीं रूकते, मेरा तो मेरा लेकिन तेरा वो भी मेरा ऐसी प्रॉब्लम बढ़ रही है ऐसी स्थिति में इतना बड़ा त्याग करना, इतना आसान नहीं है। क्या परमात्मा शिव बाबा की कृपा हमारे ऊपर हुई जो हम उनके सानिध्य में आ गये। यह सबके भाग्य में नहीं है। दुनिया में एक सौ बीस करोड़ जनता है यह सबके नसीब में नहीं होता उसके लिए प्रालब्ध होना चाहिए, हमारा पुण्य कर्म पूर्व संचित होना चाहिए। तभी हमें परमात्मा शिव बाबा के दरबार में आने का सौभाग्य मिलता है वो हमारा सौभाग्य है। सबके नसीब में नहीं है। दो अक्षर है राम-राम हरेक के मुख से नहीं निकलता, क्या बोझ उठाना पड़ता, कोई तकलीफ उठानी पड़ती सिर्फ राम कहना। वो भी हरेक के मुख से नहीं आता क्योंकि प्रालब्ध नहीं है, पूर्व संचित नहीं है, इसलिए हरेक के मुख से नहीं आता।

सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण कर रही है ब्रह्माकुमारी संस्था

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साथ हम सेवाधारी बनकर जो आये हैं। प्रालब्ध है, पूर्व संचित है इसलिए आये हैं। विद्यालय तो बहुत है, देश में है, विदेश में है, कम विद्यालय है क्या ? उन सब विद्यालयों का एक ही उद्देश्य है इन्सान का निर्माण, सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण, आज हमें क्या दिखाई दे रहा है। हमने बहुत लोग निर्माण किये है, डॉक्टर, इंजीनियर,वकील बनाये, क्या सुनते हैं हम आज, क्या पढ़ते हैं अखबार में, ब्रिज का ओपनिंग करने से पहले ब्रिज टूट गया, पानी की टंकी का ओपनिंग करने से पहले टंकी गिर गयी। इंजीनियर तो बन गया लेकिन सीमेंट और

समाजसेवी अन्ना हजारे डायमण्ड हॉल के सभागार में उपस्थित देशभर से आए हुए पच्चीस हजार के जनसमूह को सम्बोधित करते हुए।